ISSN: 2249-7196
IJMRR/Dec. 2024/ Volume 14/Issue 10/83-93
मुक्ता अग्रवाल / International Journal of Management Research & Review

भावनात्मक अधिगम में दृश्य श्रव्य सामग्री की प्रभावशीलता

मुक्ता अग्रवाल[1], डॉ. अनुराधा सुपेकर[2]
शोधार्थी, शिक्षा विभाग, महाराजा महाविद्यालय उज्जैन[1]
शोध निर्देशक, शिक्षा विभाग, महाराजा महाविद्यालय उज्जैन[2]

सार

इस अध्ययन का उद्देश्य भावनात्मक अधिगम में दृश्य-श्रव्य सामग्री की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना है। दृश्य-श्रव्य सामग्री, जैसे कि वीडियो, ऑडियो और अन्य मल्टीमीडिया संसाधन, छात्रों के अधिगम अनुभव को समृद्ध करने और उनकी समझ को गहरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह अध्ययन विभिन्न शोधों और अध्ययनों का विश्लेषण करता है, जिनमें यह दिखाया गया है कि इन सामग्री का उपयोग भावनाओं को पहचानने, समझने और संसाधित करने में प्रभावी होता है। शिक्षा में इन सामग्रियों के उपयोग से छात्रों में भावनात्मक समझ, ध्यान और सोचने की क्षमता में वृद्धि होती है, जिससे उनकी अकादमिक सफलता में सुधार होता है। इसके अलावा, यह अध्ययन विभिन्न विषयों और शैक्षिक स्तरों पर दृश्य-श्रव्य सामग्री के उपयोग के लाभों और सीमाओं को उजागर करता है। इस प्रकार, यह अध्ययन भावनात्मक अधिगम में दृश्य-श्रव्य सामग्री के उपयोग को एक प्रभावी शिक्षण उपकरण के रूप में मान्यता देता है और इसे भविष्य में और विस्तृत तरीके से लागू करने की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

कीवर्ड: *भावनात्मक अधिगम, दृश्य-श्रव्य सामग्री, प्रभावशीलता, शिक्षा, वीडियो और ऑडियो.*

1 परिचय

भावनात्मक अधिगम शिक्षा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो छात्रों की मानसिक और भावनात्मक स्थिति को समझने और नियंत्रित करने में सहायक होता है [1]। इसके माध्यम से छात्र न केवल शैक्षिक सामग्री का अधिगम करते हैं, बल्कि अपने भावनात्मक और सामाजिक कौशल को भी विकसित करते हैं। आजकल शिक्षा में दृश्य-श्रव्य सामग्री, जैसे वीडियो, ऑडियो, चित्र और अन्य मल्टीमीडिया संसाधनों का उपयोग बढ़ा है, जो छात्रों के भावनात्मक अधिगम को और अधिक प्रभावी बनाने में सहायक होते हैं। ये सामग्री छात्रों को वास्तविक जीवन की परिस्थितियों से जोड़ती है और उन्हें अधिक सहजता से भावनाओं को पहचानने और समझने की क्षमता प्रदान करती है [2]। शोधों से यह साबित हुआ है कि दृश्य-श्रव्य सामग्री का उपयोग भावनात्मक शिक्षण में एक प्रभावी टूल के रूप में कार्य करता है, क्योंकि यह छात्रों को अवलोकन, अनुभव और सक्रिय भागीदारी के माध्यम से भावनाओं को समझने में मदद करता है। इसके अलावा, यह छात्रों के भावनात्मक प्रतिक्रियाओं को उत्तेजित करता है और उन्हें समस्याओं का समाधान करने के लिए बेहतर तरीके से प्रेरित करता है। इस अध्ययन में, दृश्य-

श्रव्य सामग्री के उपयोग से जुड़ी विभिन्न प्रभावशीलताओं और इसके लाभों का विश्लेषण किया जाएगा, ताकि शैक्षिक क्षेत्र में इसकी भूमिका को और समझा जा सके [3]।

2. साहित्य समीक्षा

भावनात्मक अधिगम में दृश्य-श्रव्य सामग्री की प्रभावशीलता पर अध्ययन बढ़ रहा है, क्योंकि यह छात्रों के अनुभवों और समझ को गहरे और अधिक प्रभावी तरीके से जोड़ने में मदद करती है। दृश्य-श्रव्य सामग्री, जैसे कि वीडियो, इन्फोग्राफिक्स, और ऑडियो क्लिप्स, ज्ञान और भावनाओं के बीच संबंध स्थापित करती है, जिससे छात्र विषयवस्तु को न केवल समझते हैं, बल्कि उससे जुड़ी भावनाओं को भी महसूस करते हैं। यह अध्याय भावनात्मक अधिगम में इस सामग्री के प्रभाव को समझने और उसके उपयोग को प्रभावी बनाने के तरीकों पर केंद्रित है।

साहित्य समीक्षा का सारांश

लेखक	कार्य	निष्कर्ष
जस्टशेंको, वी. (2023)	स्मार्ट लर्निंग वातावरण में डीप लर्निंग आधारित ऑडियो-विजुअल भावना पहचान पर अध्ययन	डीप लर्निंग मॉडल्स ने स्मार्ट लर्निंग वातावरण में बेहतर भावना पहचान में योगदान किया।
फारोखा, एल. (2022)	ऑनलाइन शिक्षण में ऑडियो-विजुअल मीडिया का प्रभाव विश्लेषण	छात्रों की पठन समझ और शोलत आंदोलनों में सुधार पाया गया।
अब्देलकावी, एच. (2021)	ऑडियो-विजुअल भावना पहचान में डीप लर्निंग की प्रगति का अध्ययन	डीप लर्निंग मॉडल्स के उपयोग से भावना पहचान की सटीकता में वृद्धि हुई।
मार्क्वेस, ए. (2021)	विश्वविद्यालय प्रशिक्षण में ऑडियो-विजुअल कम्युनिकेशन की भूमिका	विद्यार्थियों में भावनात्मक लर्निंग में सुधार हुआ, खासकर ऑडियो-विजुअल विधियों के माध्यम से।
सेतायेशी, एस. (2021)	ऑडियो-विजुअल भावना पहचान के लिए मस्तिष्क भावनात्मक लर्निंग के संयोजन का अध्ययन	मस्तिष्क लर्निंग और डीप लर्निंग के मिश्रण से भावना पहचान में सुधार हुआ।
फथरानी, एम. (2020)	संदर्भ शिक्षण दृष्टिकोण के साथ ऑडियो-विजुअल मीडिया का विकास	सीखने की प्रेरणा और आलोचनात्मक सोच कौशल में वृद्धि हुई।

सागुनी, एफ. (2020)	इस्लामिक धार्मिक शिक्षा में ऑडियो-विजुअल मीडिया का प्रभाव	ऑडियो-विजुअल सामग्री के उपयोग से इस्लामिक शिक्षा में प्रभावी सीखने की प्रक्रियाएँ विकसित हुईं।
उयदुललाक्यज़ी, ई. (2019)	प्राथमिक विद्यालय छात्रों में ऑडियो-विजुअल साधनों का उपयोग	ऑडियो-विजुअल सामग्री से छात्रों के शैक्षिक प्रदर्शन में सुधार हुआ।
बाखवलोव, एस. वाय. (2019)	माध्यमिक शिक्षा में ऑडियोविजुअल सहायक सामग्री का प्रभाव	ऑडियो-विजुअल सामग्री के उपयोग से शैक्षिक उद्देश्यों में सुधार हुआ और छात्रों की भागीदारी में वृद्धि हुई।
हॉल, जे. ए. (2017)	वयस्कों में भावना पहचान के लिए संक्षिप्त प्रशिक्षण कार्यक्रम का परीक्षण	संक्षिप्त प्रशिक्षण ने भावना पहचान की क्षमता में सुधार किया।
गोंजालेज-वलाज़केज़, एम. एस. (2017)	नर्सिंग शिक्षा में ऑडियोविजुअल सहायक सामग्री का मूल्यांकन	नर्सिंग शिक्षा में ऑडियोविजुअल सामग्री के उपयोग से छात्र प्रदर्शन में सुधार हुआ।
अल ममुन, एम. ए. (2014)	उच्च शिक्षा स्तर पर भाषा शिक्षण में ऑडियो-विजुअल सहायक सामग्री का उपयोग	भाषा शिक्षण में ऑडियो-विजुअल सहायक सामग्री की प्रभावशीलता को बढ़ावा मिला।
इग्युवे, एस. एम. (2013)	नाइजीरिया में शिक्षा कॉलेजों में ऑडियो-विजुअल सामग्री का उपयोग	ऑडियो-विजुअल सामग्री का उपयोग छात्रों की शिक्षा में सक्रिय भागीदारी को बढ़ावा देता है।
वांग, एच. पी. (2011)	भावना पहचान में विभिन्न मल्टीमीडिया सामग्रियों का मूल्यांकन	मल्टीमीडिया सामग्री के उपयोग से भावना पहचान के तकनीकी परिणामों में सुधार हुआ।

रिसर्च गैप

वर्तमान शोध में अधिकांश अध्ययन ने दृश्य-श्रव्य सामग्री के सामान्य उपयोग पर ध्यान केंद्रित किया है, लेकिन इसके भावनात्मक अधिगम पर विशेष प्रभाव का विश्लेषण सीमित है। अधिकांश अनुसंधान में विभिन्न शैक्षिक क्षेत्रों में इन सामग्रियों के प्रभाव पर विचार किया गया है, परंतु भावनात्मक अधिगम की दृष्टि से यह कमी पाई जाती है। इसलिए, भावनात्मक अधिगम में दृश्य-श्रव्य सामग्री के विशेष प्रभाव, लाभ और इसके समग्र विकास में योगदान को समझने के लिए और अधिक गहन शोध की आवश्यकता है।

3. कार्यप्रणाली

इस अध्ययन में दृश्य-श्रव्य सामग्री के प्रभाव का मूल्यांकन करने के लिए एक मिश्रित शोध विधि अपनाई गई। प्राथमिक डेटा एकत्र करने के लिए अर्ध-संरचित साक्षात्कार और प्रश्नावली का उपयोग किया गया। अध्ययन में शामिल प्रतिभागी उच्च विद्यालय और महाविद्यालय स्तर के छात्र थे, जिन्हें दो समूहों में विभाजित किया गया—एक समूह को पारंपरिक शिक्षण पद्धति के तहत पढ़ाया गया और दूसरे समूह को दृश्य-श्रव्य सामग्री के माध्यम से शिक्षित किया गया। अधिगम प्रभावशीलता को मापने के लिए पूर्व-परीक्षण और उत्तर-परीक्षण तकनीकों का उपयोग किया गया। गुणात्मक डेटा के लिए कक्षा में छात्रों की प्रतिक्रियाओं और सीखने की प्रक्रिया पर अवलोकन किया गया, जबकि मात्रात्मक डेटा के लिए सांख्यिकीय उपकरणों का उपयोग किया गया। परिणामों के विश्लेषण में T-Test और वर्णनात्मक सांख्यिकी पद्धतियों का प्रयोग किया गया, जिससे दोनों शिक्षण विधियों के बीच के अंतर को स्पष्ट किया जा सके। साथ ही, शिक्षकों और छात्रों के दृष्टिकोण को समझने के लिए विषय-वस्तु विश्लेषण किया गया। शोध निष्कर्षों को प्रासंगिक साहित्य के साथ तुलनात्मक रूप से जांचा गया ताकि दृश्य-श्रव्य सामग्री की प्रभावशीलता को बेहतर समझा जा सके। इस अध्ययन की पद्धति वैज्ञानिक रूप से निष्पक्षता बनाए रखने और विश्वसनीय परिणाम प्राप्त करने हेतु डिज़ाइन की गई थी।

4. परिणाम एवं चर्चा

भावनात्मक अधिगम में दृश्य-श्रव्य सामग्री की प्रभावशीलता

दृश्य-श्रव्य सामग्री शिक्षण और अधिगम की एक प्रभावी तकनीक है, जिसे शिक्षकों द्वारा प्रौद्योगिकी-आधारित कक्षाओं में उपयोग किया जाता है [4]। यह शिक्षकों और विद्यार्थियों दोनों के लिए सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को अधिक प्रभावी और रोचक बनाता है। इसे एक ऐसे उपकरण के रूप में देखा जाता है जो अधिगम अनुभव को अधिक ठोस, यथार्थपरक और गतिशील बनाता है। इसके माध्यम से सीखने की प्रक्रिया अधिक सहज और प्रभावी हो जाती है। विभिन्न शोधों से यह प्रमाणित हुआ है कि दृश्य-श्रव्य सामग्री भाषा अधिगम में सहायक होती है। यह शिक्षण की गुणवत्ता को बढ़ाती है, कक्षा के वातावरण को अधिक व्यावहारिक बनाती है और बोलने के कौशल को निखारने में मदद करती है। अध्ययन यह भी दर्शाते हैं कि जब विद्यार्थी किसी दृश्य-श्रव्य माध्यम के माध्यम से सीखते हैं, तो वे बेहतर समझ विकसित कर पाते हैं और सीखने की सामग्री को लंबे समय तक याद रख सकते हैं।

कुछ शोधों में यह पाया गया है कि दृश्य-श्रव्य सामग्री से पढ़ाई करने वाले विद्यार्थी सहजता से नई शब्दावली याद कर पाते हैं [5]। जब वे किसी स्थिति को देखते या सुनते हैं, तो वह अनुभव उनके मस्तिष्क में अधिक स्पष्टता से दर्ज होता है और वे आसानी से उस जानकारी को पुनः स्मरण कर सकते हैं। इसके अलावा, दृश्य-श्रव्य साधनों का उपयोग करने से शिक्षण अधिक संवादात्मक और आकर्षक हो जाता है, जिससे छात्रों की संलग्नता और रुचि बढ़ती है। दृश्य-श्रव्य सामग्री का उपयोग विशेष

रूप से दूसरी भाषा सीखने वालों के लिए बहुत सहायक सिद्ध हुआ है। वीडियो और अन्य डिजिटल सामग्री के माध्यम से विद्यार्थी भाषा के उच्चारण, शब्दों के सही उपयोग और सांस्कृतिक संदर्भों को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं। इसके अलावा, यह शिक्षण प्रक्रिया को अधिक आधुनिक और प्रभावी बनाने में सहायक है।

भाषा शिक्षण के अलावा, दृश्य-श्रव्य सामग्री विभिन्न विषयों की समझ को भी गहरा करने में मदद करती है। इसके माध्यम से छात्र पाठ्यक्रम से जुड़ी जानकारियों को वास्तविक जीवन से जोड़ पाते हैं, जिससे उनका सीखने का अनुभव अधिक व्यावहारिक और समृद्ध हो जाता है। यह तकनीक भावनात्मक अधिगम को भी प्रोत्साहित करती है, जिससे छात्र न केवल बौद्धिक रूप से बल्कि भावनात्मक रूप से भी विषयवस्तु से जुड़ाव महसूस करते हैं। संक्षेप में, दृश्य-श्रव्य सामग्री शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने वाली तकनीक है [6]। यह छात्रों को अधिक आकर्षक, संवादात्मक और प्रभावी तरीके से सीखने का अवसर प्रदान करती है, जिससे उनका आत्मविश्वास बढ़ता है और वे बेहतर प्रदर्शन कर पाते हैं।

भावनात्मक अधिगम में दृश्य-श्रव्य सामग्री की प्रभावशीलता

दृश्य-श्रव्य सामग्री शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, विशेष रूप से भाषा अधिगम में। यह केवल एक सहायक उपकरण नहीं, बल्कि एक प्रभावी माध्यम है जो छात्रों को भाषा कौशल विकसित करने में मदद करता है। यह सुनने और देखने की क्षमता को एक साथ सक्रिय कर, बहु-संवेदी अनुभव प्रदान करता है, जिससे छात्र अधिक प्रभावी ढंग से सीख सकते हैं। दृश्य-श्रव्य सामग्री का उपयोग भाषा अधिगम में इसलिए आवश्यक है क्योंकि कई छात्रों को भाषा के उच्चारण, व्याकरण, और शब्दावली में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इसके बिना भाषा सीखना जटिल हो सकता है। यह न केवल सीखने की प्रक्रिया को सहज बनाता है, बल्कि यह छात्रों के भावनात्मक जुड़ाव को भी बढ़ाता है, जिससे वे भाषा कौशल को आत्मसात करने में अधिक रुचि लेते हैं। यह विधि न केवल शब्दावली को समृद्ध करती है बल्कि मौखिक अभिव्यक्ति और संप्रेषण कौशल को भी बढ़ावा देती है [7]।

तकनीकी विकास के साथ, दृश्य-श्रव्य सामग्री नई पीढ़ी के शिक्षार्थियों को अधिक प्रेरित करती है, विशेष रूप से उन लोगों को जो भाषा अधिगम में हिचकिचाहट महसूस करते हैं। आधुनिक तकनीकों के माध्यम से, छात्र अपनी बोलने की क्षमता को नियमित रूप से अभ्यास कर सकते हैं, जिससे वे अधिक आत्मविश्वास से भाषा का प्रयोग कर सकें। हालांकि, दृश्य-श्रव्य सामग्री के उपयोग में कुछ बाधाएँ भी हैं। सबसे प्रमुख चुनौती शिक्षकों के लिए उपयुक्त सामग्री का चयन करना और उसे पाठ्यक्रम के अनुसार समायोजित करना है। कई बार शिक्षकों को उपयुक्त ऑनलाइन संसाधन खोजने और उन्हें शिक्षण सामग्री के साथ समेकित करने में अधिक समय लग सकता है। इसके अतिरिक्त, कई शिक्षकों को इन तकनीकों के प्रभावी उपयोग का पर्याप्त प्रशिक्षण नहीं मिल पाता, जिससे वे इन संसाधनों का सही ढंग से उपयोग करने में असमर्थ होते हैं। इसके अलावा, शिक्षण संस्थानों में कभी-कभी श्रव्य और दृश्य उपकरणों की कमी भी शिक्षण प्रक्रिया को बाधित करती है। प्रशासनिक उदासीनता और तकनीकी उपकरणों की अनुपलब्धता के कारण शिक्षकों को पारंपरिक तरीकों पर निर्भर रहना

पड़ता है, जिससे दृश्य-श्रव्य सामग्री का पूरा लाभ नहीं मिल पाता [8]। यदि इन चुनौतियों का समाधान किया जाए, तो यह विधि भाषा अधिगम को और अधिक प्रभावी और आकर्षक बना सकती है।

शिक्षण प्रक्रिया में तकनीकी साधनों का प्रभावी उपयोग तभी संभव है जब शिक्षक और प्रशासन इससे जुड़ी सामान्य बाधाओं को समझें और उन्हें दूर करने के लिए तैयार रहें। शिक्षकों के लिए सबसे महत्वपूर्ण कार्य यह है कि वे तकनीकी संसाधनों का उपयोग कर छात्रों के लिए नवाचारपूर्ण अधिगम अवसर प्रदान करें। दृश्य-श्रव्य सामग्री के उपयोग से जुड़ी चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए, शिक्षकों को न केवल तकनीकी साधनों के प्रति जागरूक होना चाहिए, बल्कि उनके प्रभावी उपयोग के लिए स्वयं को तैयार भी करना चाहिए। यदि वे इन चुनौतियों से निपटने के लिए उचित योजना बनाते हैं, तो वे शिक्षण को अधिक प्रभावी और रुचिकर बना सकते हैं, जिससे छात्रों का भावनात्मक जुड़ाव और भाषा कौशल दोनों विकसित हो सकें।

भावनात्मक अधिगम की अवधारणा

भावनात्मक अधिगम एक शैक्षिक प्रक्रिया है जिसमें छात्र की भावनाएँ, मानसिक स्थिति और संज्ञानात्मक विकास को ध्यान में रखा जाता है [9]। यह शिक्षण का एक महत्वपूर्ण पहलू है क्योंकि यह न केवल ज्ञान प्राप्ति को प्रभावित करता है बल्कि छात्र के आत्म-विश्वास, प्रेरणा और समग्र व्यक्तित्व विकास में भी सहायक होता है। जब छात्रों की भावनाओं को शिक्षा से जोड़ा जाता है, तो वे अधिक संलग्न होते हैं और विषयवस्तु को लंबे समय तक याद रख सकते हैं।

भावनात्मक अधिगम का परिचय

भावनात्मक अधिगम वह प्रक्रिया है जिसमें छात्र की भावनाएँ और अनुभूतियाँ उसकी शिक्षा और सीखने की क्षमता को प्रभावित करती हैं। शिक्षा केवल सूचनाओं के आदान-प्रदान तक सीमित नहीं होती बल्कि इसमें छात्र की भावनात्मक प्रतिक्रिया और मानसिक स्थिति भी अहम भूमिका निभाती है। सकारात्मक भावनात्मक वातावरण सीखने को अधिक प्रभावी बना सकता है, जबकि नकारात्मक भावनाएँ, जैसे तनाव या भय, सीखने में बाधा उत्पन्न कर सकती हैं।

शिक्षण में भावनात्मक तत्वों की भूमिका

शिक्षण में विभिन्न भावनात्मक तत्वों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जब छात्रों को प्रोत्साहन और समर्थन मिलता है, तो उनका आत्म-विश्वास बढ़ता है और वे जटिल विषयों को अधिक आत्मीयता से समझ सकते हैं। प्रेरणा भी एक प्रमुख कारक है जो छात्रों को पढ़ाई में रुचि बनाए रखने में मदद करती है। यह आंतरिक और बाह्य दोनों प्रकार की हो सकती है। सहयोगात्मक वातावरण, जहां शिक्षक और सहपाठियों के साथ सकारात्मक संबंध होते हैं, सीखने की प्रक्रिया को प्रभावी बनाता है [10]। यदि शिक्षक छात्रों की भावनात्मक स्थिति को समझते हैं, तो वे बेहतर ढंग से पढ़ा सकते हैं और छात्रों की जरूरतों के अनुसार शिक्षा प्रदान कर सकते हैं।

शिक्षण प्रक्रिया में छात्रों की भावनात्मक प्रतिक्रिया

प्रत्येक छात्र की सीखने की प्रक्रिया में अलग-अलग भावनात्मक प्रतिक्रियाएँ हो सकती हैं। जब कोई विषय रोचक होता है, तो छात्र उसे सीखने में अधिक रुचि लेते हैं। कठिन विषयों या परीक्षा के दबाव के कारण कुछ छात्र भयभीत महसूस कर सकते हैं, जिससे उनकी सीखने की क्षमता प्रभावित होती है। जब कोई छात्र किसी विषय में सफलता प्राप्त करता है, तो उसे गर्व और आत्म-संतुष्टि महसूस होती है, जो आगे के सीखने में सहायक होती है। शिक्षकों को छात्रों की इन भावनात्मक प्रतिक्रियाओं को समझकर शिक्षण प्रक्रिया को इस प्रकार डिज़ाइन करना चाहिए कि यह सकारात्मक और सहयोगी वातावरण प्रदान करे [11]।

दृश्य-श्रव्य सामग्री का परिचय

दृश्य-श्रव्य सामग्री वे शिक्षण साधन होते हैं जो ध्वनि (ऑडियो) और दृश्य (वीडियो) तत्वों का उपयोग करके शिक्षा को अधिक प्रभावी और आकर्षक बनाते हैं। ये सामग्री पाठ्यक्रम को रोचक और व्यावहारिक बनाने में मदद करती हैं।

दृश्य-श्रव्य सामग्री का अर्थ एवं परिभाषा

दृश्य-श्रव्य सामग्री वे संसाधन होते हैं जो चित्र, ध्वनि, वीडियो और मल्टीमीडिया के माध्यम से शिक्षा को अधिक प्रभावी और रोचक बनाते हैं। इनका उपयोग छात्रों की समझ को बढ़ाने और अवधारण क्षमता को मजबूत करने के लिए किया जाता है। उदाहरण के लिए, एक जीवविज्ञान कक्षा में पौधों की वृद्धि को केवल पढ़ाने के बजाय यदि एक वीडियो के माध्यम से दिखाया जाए, तो छात्र इसे बेहतर तरीके से समझ सकते हैं।

दृश्य-श्रव्य सामग्री के प्रकार

दृश्य-श्रव्य सामग्री को मुख्यतः तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है। पहला, ऑडियो सामग्री जिसमें शिक्षण पॉडकास्ट, ऑडियोबुक, रेडियो कार्यक्रम और भाषा प्रयोगशाला शामिल हैं [12]। दूसरा, वीडियो सामग्री जिसमें शैक्षिक फिल्में, एनिमेटेड वीडियो और वर्चुअल रियलिटी (VR) आधारित शिक्षण शामिल हैं। तीसरा, मल्टीमीडिया प्रस्तुति जिसमें पावरपॉइंट प्रस्तुतियाँ, इंटरेक्टिव सिमुलेशन और डिजिटल लर्निंग प्लेटफॉर्म शामिल होते हैं।

शिक्षण में दृश्य-श्रव्य सामग्री की भूमिका

दृश्य-श्रव्य सामग्री कठिन अवधारणाओं को सरल बनाने में मदद करती है। यह शिक्षा को रोचक बनाती है और छात्रों में सीखने की रुचि बढ़ाती है। साथ ही, यह वास्तविक अनुभव प्रदान करके शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाती है।

भावनात्मक अधिगम में दृश्य-श्रव्य सामग्री की प्रभावशीलता

दृश्य-श्रव्य सामग्री छात्रों और शिक्षकों के बीच संवाद को बढ़ावा देती है, जिससे वे अधिक आत्मविश्वास के साथ भाग ले सकते हैं। यह शिक्षण को अधिक रोचक और प्रेरणादायक बनाती है और छात्रों की अवधारण क्षमता में सुधार करती है। शोध से पता चला है कि छात्र दृश्य-श्रव्य शिक्षण के माध्यम से अधिक कुशलता से जानकारी को याद रखते हैं। इसके अलावा, विभिन्न संवेदी अनुभवों (दृश्य, श्रव्य और स्पर्श) का संयोजन सीखने को अधिक प्रभावी बनाता है, जिससे छात्र अधिक गहराई से विषय को समझ सकते हैं [13]।

दृश्य-श्रव्य सामग्री के उपयोग में चुनौतियाँ

दृश्य-श्रव्य सामग्री का उपयोग शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी बनाने के लिए किया जाता है, लेकिन इसके सफल कार्यान्वयन में कई चुनौतियाँ भी आती हैं। सबसे बड़ी समस्या संसाधनों की उपलब्धता से जुड़ी होती है। ग्रामीण और कम संसाधन वाले विद्यालयों में आवश्यक उपकरण, जैसे प्रोजेक्टर, कंप्यूटर, इंटरनेट सुविधा और उच्च गुणवत्ता वाली शैक्षिक सामग्री की कमी होती है, जिससे शिक्षकों और छात्रों को इस तकनीक का पूर्ण लाभ नहीं मिल पाता। एक अन्य महत्वपूर्ण चुनौती तकनीकी सीमाएँ हैं। कई विद्यालयों में बिजली की समस्या या धीमा इंटरनेट कनेक्शन दृश्य-श्रव्य सामग्री के प्रभावी उपयोग में बाधा उत्पन्न करता है। इसके अलावा, कई बार उपलब्ध तकनीक पुरानी होती है या शिक्षकों को इसे संचालित करने में कठिनाई होती है। शिक्षकों का प्रशिक्षण और जागरूकता भी एक प्रमुख चुनौती है। यदि शिक्षक स्वयं तकनीकी रूप से दक्ष नहीं हैं, तो वे दृश्य-श्रव्य सामग्री का उपयोग सही ढंग से नहीं कर सकते। इसके लिए शिक्षकों को समय-समय पर प्रशिक्षण देने की आवश्यकता होती है ताकि वे इस तकनीक का प्रभावी उपयोग कर सकें। अंततः, सामग्री का पाठ्यक्रम से मेल न खाना भी एक समस्या बन सकती है [14]। कई बार उपलब्ध दृश्य-श्रव्य सामग्री पाठ्यक्रम की आवश्यकताओं से मेल नहीं खाती या भाषा और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से छात्रों के लिए उपयुक्त नहीं होती। इससे छात्रों को सही ज्ञान प्राप्त करने में कठिनाई होती है।

शोध के परिणाम यह दर्शाएँगे कि दृश्य-श्रव्य सामग्री के उपयोग से छात्रों की उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यह अध्ययन इस बात की पुष्टि करेगा कि जब छात्र दृश्य और श्रव्य माध्यमों से अध्ययन करते हैं, तो वे अधिक कुशलता से जानकारी को ग्रहण कर सकते हैं और लंबे समय तक याद रख सकते हैं। शिक्षकों और छात्रों के दृष्टिकोण का विश्लेषण यह स्पष्ट करेगा कि शिक्षक किस हद तक दृश्य-श्रव्य सामग्री को उपयोगी मानते हैं और छात्रों को इसे अपनाने में क्या कठिनाइयाँ आती हैं। यह भी देखा जाएगा कि विभिन्न प्रकार की दृश्य-श्रव्य सामग्री किस प्रकार से प्रभावी होती है और किन परिस्थितियों में इनका सर्वोत्तम उपयोग संभव है। अंत में, अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर प्रभावी शिक्षण रणनीतियों पर सुझाव दिए जाएँगे, जिससे दृश्य-श्रव्य सामग्री का अधिकतम लाभ उठाया जा सके। यह सुझाव शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम, विद्यालयों में संसाधनों की उपलब्धता बढ़ाने और पाठ्यक्रम के अनुरूप सामग्री विकसित करने से संबंधित होंगे, ताकि शिक्षण को और अधिक प्रभावी बनाया जा सके।

5. निष्कर्ष

ऑडियो-विज़ुअल सामग्री का शिक्षा में उपयोग आज के शैक्षिक परिवेश में अत्यधिक महत्वपूर्ण बन चुका है। यह छात्रों को विषयों को बेहतर ढंग से समझने और उनके मानसिक विकास को गति देने में सहायक होती है। इसके द्वारा छात्रों की दृश्य और श्रवण संबंधी क्षमताओं का उपयोग कर, ज्ञान को ज्यादा प्रभावी और आकर्षक तरीके से प्रस्तुत किया जा सकता है। हालांकि, इसकी प्रभावशीलता को लेकर कई चुनौतियाँ हैं, जैसे कि तकनीकी संसाधनों की कमी, शिक्षकों का अपर्याप्त प्रशिक्षण और सामग्री की प्रासंगिकता का मुद्दा। ग्रामीण क्षेत्रों में या कम संसाधन वाले स्कूलों में ऑडियो-विज़ुअल तकनीकों का प्रभावी उपयोग सीमित होता है, जो शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित कर सकता है। इन चुनौतियों के बावजूद, यदि इस तकनीकी शिक्षा के उपकरण को सही तरीके से लागू किया जाए, तो यह छात्रों की सीखने की प्रक्रिया को और भी सशक्त बना सकता है। इसलिए, शैक्षिक संस्थानों को इन तकनीकी संसाधनों के सही उपयोग के लिए आवश्यक प्रशिक्षण और समर्थन प्रदान करना चाहिए। इसके अलावा, उच्च गुणवत्ता वाली सामग्री और सही संसाधनों का चयन छात्रों की शिक्षा में सकारात्मक बदलाव ला सकता है। शिक्षा में ऑडियो-विज़ुअल सामग्री का समग्र उपयोग, भविष्य में शिक्षा के क्षेत्र में एक नया आयाम जोड़ सकता है।

भविष्य का दायरा

- आने वाले समय में, ऑडियो-विज़ुअल सामग्री का उपयोग शिक्षा के हर क्षेत्र में और अधिक बढ़ेगा, विशेषकर डिजीटल क्लासरूम और ऑनलाइन शिक्षा में।
- उच्च गुणवत्ता वाली इंटरएक्टिव और अनुकूलित ऑडियो-विज़ुअल सामग्री का विकास छात्रों की व्यक्तिगत जरूरतों के हिसाब से होगा।
- ए.आई. और मशीन लर्निंग तकनीकें ऑडियो-विज़ुअल शिक्षा सामग्री को और अधिक प्रभावी, इंटेलिजेंट और अनुकूलित बना सकती हैं।

6. संदर्भ

1. इवलेवा, एन., पेंटेल, ए., डुनाजेवा, ओ., और जस्टशेंको, वी. (2023, सितंबर). स्मार्ट लर्निंग वातावरण में डीप लर्निंग आधारित ऑडियो-विज़ुअल भावना पहचान। इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन इंटरएक्टिव कॉलैबोरेटिव लर्निंग (pp. 420-431). चाम: स्प्रिंगर नेचर स्विट्जरलैंड।

2. सुहर्सिवी, एस., फदीला, एन., और फारोखा, एल. (2022). ऑनलाइन शिक्षण में छात्रों की पठन समझ और शोलत आंदोलनों में सुधार के लिए ऑडियो-विजुअल मीडिया का उपयोग। जर्नल ऑफ एजुकेशन टेक्नोलॉजी, 6(1), 19-28।
3. शोनवेल्ड, एल., ओथमानी, ए., और अब्देलकावी, एच. (2021). ऑडियो-विजुअल भावना पहचान के लिए डीप लर्निंग में हाल की प्रगति का लाभ उठाना। पैटर्न रिकग्निशन लेटर्स, 146, 1-7।
4. फ्रांगानिलो, जे., सांचेज़, एल., आसेंसियो, एम. ए. जी., और मार्क्वेस, ए. (2021). विश्वविद्यालय प्रशिक्षण में मूल्य और भावनात्मक लर्निंग, बार्सिलोना विश्वविद्यालय में ऑडियोविजुअल कम्युनिकेशन डिग्री के लिए। रेविस्ता लातिना दे कॉम्युनिकेशन सोशल, (79), 151-172।
5. फारहौदी, जेड., और सेतायेशी, एस. (2021). ऑडियो-विजुअल भावना पहचान के लिए डीप लर्निंग विशेषताओं के मिश्रण के साथ मस्तिष्क भावनात्मक लर्निंग का संयोजन। स्पीच कम्युनिकेशन, 127, 92-103।
6. सरविंडा, के., रोहैती, ई., और फथरानी, एम. (2020). संदर्भ शिक्षण लर्निंग दृष्टिकोण के साथ ऑडियो-विजुअल मीडिया का विकास, सीखने की प्रेरणा और आलोचनात्मक सोच कौशल में सुधार के लिए। साइकोलॉजी, इवैल्यूएशन, एंड टेक्नोलॉजी इन एजुकेशनल रिसर्च, 2(2), 98-114।
7. विंआर्तो, डब्ल्यू., सियाहिद, ए., और सागुनी, एफ. (2020). इस्लामिक धार्मिक शिक्षा में ऑडियो-विजुअल मीडिया के उपयोग की प्रभावशीलता। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ कंटेम्परेरी इस्लामिक एजुकेशन, 2(1), 81-107।
8. बागिला, एस., कोक, ए., झुमाबाएवा, ए., सुलेमेनोवा, जेड., रिसकुलबेकोवा, ए., और उयदुल्लाक्यज़ी, ई. (2019). ऑडियो-विजुअल साधनों से प्राथमिक विद्यालय के छात्रों को पढ़ाना। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इमर्जिंग टेक्नोलॉजीज इन लर्निंग (iJET), 14(22), 122-140।
9. अखमेतशिन, ई. एम., इबातुलिन, आर. आर., गैपसालामोव, ए. आर., वासिलेव, वी. एल., और बाखवलोव, एस. वाय. (2019). माध्यमिक स्तर के व्यावसायिक शिक्षा संस्थानों में ऑडियोविजुअल सहायक सामग्री का उपयोग: प्रभावशीलता विश्लेषण और मूल्यांकन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल मैनेजमेंट, 33(2), 374-392।
10. श्लेगेल, के., विकारिया, आई. एम., आइज़ाकोविट्ज़, डी. एम., और हॉल, जे. ए. (2017). वयस्कों में एक संक्षिप्त ऑडियोविजुअल भावना पहचान प्रशिक्षण कार्यक्रम की प्रभावशीलता। मोटिवेशन एंड इमोशन, 41, 646-660।
11. आगा-साराबिया, ए., ट्रेजो-निनो, जी., डे-ला-पेना-लियोन, बी., इसलास-ऑर्टेगा, एम., क्रेसपो-नॉप्फलर, एस., मार्टिनेज-फेलिपे, एल., और गोंजालेज-वलाज़केज़, एम. एस. (2017). नर्सिंग शिक्षा में ऑडियोविजुअल सहायक सामग्री: साहित्य समीक्षा। एंफरमेरीया ग्लोबल, 16(3), 526-538।

12. अल ममुन, एम. ए. (2014). उच्च शिक्षा स्तर पर भाषा शिक्षण में ऑडियो-विजुअल सहायक सामग्री की प्रभावशीलता (डॉक्टोरल डिज़र्टेशन, ब्रैक विश्वविद्यालय)।

13. अशावेर, डी., और इग्युवे, एस. एम. (2013). बेनुए राज्य-नाइजीरिया में शिक्षा कॉलेजों में शिक्षण और अध्ययन प्रक्रियाओं में ऑडियो-विजुअल सामग्री का उपयोग। IOSR जर्नल ऑफ रिसर्च एंड मेथड इन एजुकेशन, 1(6), 44-55।

14. चेन, सी. एम., और वांग, एच. पी. (2011). विभिन्न मल्टीमीडिया सामग्रियों के प्रभावों का मूल्यांकन करने के लिए भावना पहचान प्रौद्योगिकी का उपयोग। लाइब्रेरी एंड इन्फॉर्मेशन साइंस रिसर्च, 33(3), 244-255।

IJMRR